१०. तरुण के स्वप्न

पाठ का सारांश

यह पाठ महान स्वतंत्रता सेनानी सुभाषचंद्र बोस के जीवन, विचारों और देशभक्ति पर आधारित है। इसमें उनके बचपन से लेकर युवावस्था तक की घटनाओं का वर्णन है। बचपन से ही सुभाष का मन अध्यात्म और देशभक्ति की ओर झुका हुआ था। वे अत्यंत मेधावी, साहसी और दृढ़ निश्चयी छात्र थे।

उनका सपना भारत को विदेशी शासन से मुक्त कराना था। वे मानते थे कि देश की स्वतंत्रता के लिए युवाओं को त्याग और बलिदान के लिए तैयार रहना चाहिए। उनका प्रसिद्ध नारा था –

"तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा।"

इस पाठ में यह भी बताया गया है कि सुभाषचंद्र बोस ने 'आज़ाद हिंद फ़ौज' का गठन कर भारत को स्वतंत्र कराने का प्रयास किया। उनका जीवन देश के युवाओं को प्रेरित करता है कि वे राष्ट्रहित को सर्वोपरि मानें, आत्मविश्वास रखें और कठिन परिस्थितियों में भी संघर्ष का मार्ग न छोड़ें।

मुख्य संदेश:

- देश की स्वतंत्रता और प्रगति के लिए युवाओं को साहस, त्याग और बलिदान की भावना अपनानी चाहिए।
- सुभाषचंद्र बोस का जीवन यह प्रेरणा देता है कि कठिन परिस्थितियों में भी दृढ़ संकल्प और राष्ट्रप्रेम से कोई भी लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है।
- मातृभूमि के प्रति निष्ठा और कर्तव्यबोध हर नागरिक का परम धर्म है।
- सच्चे सपने वही होते हैं जो राष्ट्रहित के लिए संघर्ष और सेवा की राह दिखाएँ।

कठिन शब्द

- **त्याग** - छोड़ देना, बलिदान
- **दृढ़ संकल्प** - मजबूत निश्चय
- **निष्ठा** - ईमानदारी, वफादारी
- **मातृभूमि** - जन्मभूमि, अपना देश
- **स्वतंत्रता** - आज़ादी
- **बलिदान** - अपने प्राण या सुख की आहुति देना
- **संघर्ष** - कठिन परिश्रम, लड़ाई
- **प्रेरणास्रोत** - प्रेरणा देने वाला व्यक्ति या कारण
- **राष्ट्रप्रेम** - देश के प्रति प्रेम
- **आत्मविश्वास** - अपने ऊपर भरोसा

www.onepointlearning.com

पाठ से

मेरी समझ से

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उपयुक्त उत्तर के सम्मुख तारा (★) बनाइए। कुछ प्रश्नों के एक से अधिक उत्तर भी हो सकते हैं।

1. **"उनके स्वप्न के उत्तराधिकारी आज हम हैं।" इस कथन में रेखांकित शब्द 'हम' किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?**
   - सुभाषचंद्र बोस के लिए
   - चित्तरंजन दास के लिए
   - देश के तरुण वर्ग के लिए ★
   - भारतवासियों के लिए ★
2. **स्वाधीन राष्ट्र का स्वप्न साकार होगा?**
   - आर्थिक असमानता से
   - श्रम और कर्म की मर्यादा से ★
   - स्त्री-पुरुष के भिन्न अधिकारों से
   - जातिभेद से
3. **"उनके स्वप्न के उत्तराधिकारी आज हम हैं।" "उत्तराधिकारी" होने से क्या अभिप्राय है?हमें उनके स्वप्नों को संजोकर रखना है**
   - हमें उनके स्वप्नों को संजोकर रखना है
   - हमें भी उनकी तरह स्वप्न देखने का अधिकार है
   - उनके स्वप्नों को पूरा करने के लिए हमें ही कर्म करना है ★
   - उनके स्वप्नों पर चर्चा करने का दायित्व हमारा ही है
4. **जब प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षा और उन्नति का समान अवसर प्राप्त होगा तब-**
   - राष्ट्र की श्रम-शक्ति बढ़ेगी
   - राष्ट्र स्वाधीन बनेगा ★
   - तरुणों का साहस बढ़ेगा
   - राष्ट्र स्वप्नदर्शी होगा

(ख) हो सकता है कि आपके समूह के साथियों ने अलग-अलग उत्तर चुने हों। अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुने?

उत्तर: मेरे चुने हुए उत्तर सही इसलिए हैं क्योंकि –

1. सुभाषचंद्र बोस के सपने केवल उनके नहीं, बल्कि पूरे देश के युवाओं और भारतवासियों के लिए प्रेरणा हैं। इसलिए 'हम' शब्द से भारतवासी और तरुण वर्ग दोनों ही अभिप्रेत हैं।
2. सच्ची स्वतंत्रता आर्थिक समानता, श्रम का सम्मान और सभी को बराबरी का हक देने से ही प्राप्त होगी।
3. 'उत्तराधिकारी' का अर्थ है कि हमें केवल चर्चा ही नहीं करनी, बल्कि उनके अधूरे सपनों को पूरा करने की जिम्मेदारी निभानी है।
4. शिक्षा और उन्नति के समान अवसर से ही राष्ट्र मजबूत और स्वतंत्र बन सकता है।

मिलकर करें मिलान

नीचे स्तंभ 1 में पाठ से चुनकर कुछ पंक्तियाँ दी गई हैं और स्तंभ 2 में उन पंक्तियों से संबंधित भाव-विचार दिए गए हैं। स्तंभ 1 में दी गई पंक्तियों का स्तंभ 2 में दिए गए भाव-विचार से सही मिलान कीजिए।

क्रम	स्तंभ 1 (पंक्ति)	स्तंभ 2 (भाव-विचार)
1	**"इसी स्वप्न की प्रेरणा से हम उठते हैं, बैठते हैं, चलते हैं, फिरते हैं और लिखते हैं, भाषण देते हैं, काम-काज करते हैं।"**	**1. समाज में सभी व्यक्तियों को सभी तरह की स्वतंत्रता हो और उस पर किसी तरह का बंधन या सामाजिक दबाव न हो।**

www.onepointlearning.com

क्रम	स्तंभ 1 (पंक्ति)	स्तंभ 2 (भाव-विचार)
2	**"जो राष्ट्र हमारे स्वदेशी समाज के यंत्र के रूप में काम करेगा, सर्वोपरि वह समाज और राष्ट्र भारतवासियों का अभाव मिटाएगा।"**	**2. हमारी समूची दिनचर्या और आचार-विचार इसी लक्ष्य (स्वप्न) की प्राप्ति पर केंद्रित हैं।**
3	**"उस समाज में व्यक्ति सब दृष्टियों से मुक्त हो तथा समाज के दबाव से वह मरे नहीं।"**	**3. जिस देश की योजनाएँ हमारे अपने समाज को ध्यान में रखकर बनाई जाएँगी, उस देश में किसी भी प्रकार का अभाव नहीं होगा।**

उत्तर:

क्रम	स्तंभ 1 (पंक्ति)	स्तंभ 2 (भाव-विचार)
1	**"इसी स्वप्न की प्रेरणा से हम उठते हैं, बैठते हैं, चलते हैं, फिरते हैं और लिखते हैं, भाषण देते हैं, काम-काज करते हैं।"**	★ 2. हमारी समूची दिनचर्या और आचार-विचार इसी लक्ष्य (स्वप्न) की प्राप्ति पर केंद्रित हैं।
2	**"जो राष्ट्र हमारे स्वदेशी समाज के यंत्र के रूप में काम करेगा, सर्वोपरि वह समाज और राष्ट्र भारतवासियों का अभाव मिटाएगा।"**	★ 3. जिस देश की योजनाएँ हमारे अपने समाज को ध्यान में रखकर बनाई जाएँगी, उस देश में किसी भी प्रकार का अभाव नहीं होगा।
3	**"उस समाज में व्यक्ति सब दृष्टियों से मुक्त हो तथा समाज के दबाव से वह मरे नहीं।"**	★ 1. समाज में सभी व्यक्तियों को सभी तरह की स्वतंत्रता हो और उस पर किसी तरह का बंधन या सामाजिक दबाव न हो।

पंक्तियों पर चर्चा

पाठ से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं इन्हें ध्यानपूर्वक पढ़िए और इन पर विचार कीजिए आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार अपनी कक्षा में साझा कीजिए।

(क) "उस समाज में अर्थ की विषमता न हो"

उत्तर: समाज में अमीर-गरीब का भेदभाव समाप्त हो और सभी को समान आर्थिक अवसर मिलें।

(ख) "वही स्वप्न उनकी शक्ति का उत्स बना और उनके आनंद का निर्झर रहा।"

उत्तर: सुभाषचंद्र बोस का सपना (स्वतंत्र भारत का सपना) ही उनकी शक्ति और प्रेरणा का मुख्य स्रोत था, जिसने उन्हें कठिन परिस्थितियों में भी खुश और उत्साही बनाए रखा।

(ग) "उस समाज में व्यक्ति सब दृष्टियों से मुक्त हो"

उत्तर: ऐसा समाज जहाँ हर व्यक्ति को सभी क्षेत्रों में स्वतंत्रता मिले, कोई सामाजिक, आर्थिक या मानसिक बंधन न हो।

सोच-विचार के लिए

अब आप इस पाठ को पुनः पढ़िए और निम्नलिखित के विषय में पता लगाकर लिखिए—

(क) नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने किस प्रकार के राष्ट्र निर्माण का स्वप्न देखा था?

उत्तर: नेताजी ने एक ऐसे राष्ट्र का सपना देखा जहाँ समानता, शिक्षा, आर्थिक न्याय, सम्मान और स्वतंत्रता सबको मिले, और जाति, धर्म, भाषा या लिंग के आधार पर किसी से भेदभाव न हो।

www.onepointlearning.com

(ख) नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने किस लक्ष्य की प्राप्ति को अपने जीवन की सार्थकता के रूप में देखा?

उत्तर: नेताजी के जीवन का सबसे बड़ा लक्ष्य भारत को अंग्रेज़ी शासन से पूर्ण स्वतंत्र कराना था। उन्होंने अपनी पूरी शक्ति और जीवन इसी उद्देश्य के लिए समर्पित कर दिया।

(ग) "आलसी तथा अकर्मण्य के लिए कोई स्थान नहीं रहेगा" सुभाषचंद्र बोस ने ऐसा क्यों कहा होगा?

उत्तर: क्योंकि स्वतंत्र भारत के निर्माण के लिए परिश्रमी, जागरूक और जिम्मेदार नागरिकों की आवश्यकता थी। आलस्य और कामचोरी से राष्ट्र का विकास रुक जाएगा। इसलिए उन्होंने परिश्रम और कर्मठता पर ज़ोर दिया।

(घ) नेताजी सुभाषचंद्र बोस के लक्ष्यों या ध्येय को पूरा करने के लिए आज की युवा पीढ़ी क्या-क्या कर सकती है?

उत्तर:

- देशभक्ति की भावना को अपनाकर राष्ट्रहित को सर्वोपरि मानना।
- शिक्षा, विज्ञान, तकनीक और उद्यम में अग्रसर होना।
- सामाजिक बुराइयों को मिटाने के लिए आगे आना।
- परिश्रम, अनुशासन और सेवा-भाव से देश की प्रगति में योगदान देना।
- जाति, धर्म या लिंगभेद से ऊपर उठकर एकता और भाईचारे को बढ़ावा देना।

अनुमान और कल्पना से

(क) "उस समाज में व्यक्ति सब दृष्टियों से मुक्त हो", सुभाषचंद्र बोस ने किन-किन दृष्टियों से मुक्ति की बात की होगी?

उत्तर: सुभाषचंद्र बोस ने निम्नलिखित दृष्टियों से मुक्ति की बात की होगी:

- **सामाजिक दृष्टि:** जातिभेद और सामाजिक दबाव से मुक्ति।
- **आर्थिक दृष्टि:** गरीबी और आर्थिक असमानता से मुक्ति।
- **मानसिक दृष्टि:** डर, अज्ञानता और विदेशी प्रभाव से मुक्ति।
- **लैंगिक दृष्टि:** स्त्री-पुरुष के बीच भेदभाव से मुक्ति।

(ख) "उस समाज में नारी मुक्त होकर समाज एवं राष्ट्र के पुरुषों की तरह समान अधिकार का उपभोग करे", सुभाषचंद्र बोस को अपने भाषण में नारी के लिए समान अधिकारों की बात क्यों कहनी पड़ी?

उत्तर: उस समय समाज में महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार नहीं मिलते थे। वे शिक्षा, स्वतंत्रता और सामाजिक भागीदारी में पीछे थीं। नेताजी ने नारी मुक्ति की बात इसलिए की ताकि महिलाएँ भी समाज और राष्ट्र निर्माण में बराबर का योगदान दे सकें।

(ग) आपके विचार से हमारे समाज में और कौन-कौन से लोग हैं जिन्हें विशेष अधिकार दिए जाने की आवश्यकता है?

उत्तर: हमारे समाज में निम्नलिखित लोगों को विशेष अधिकारों की आवश्यकता है:

- गरीब और वंचित वर्ग: आर्थिक और शैक्षिक सहायता के लिए।
- दिव्यांगजन: समान अवसर और सुविधाएँ।
- अल्पसंख्यक समुदाय: सामाजिक और धार्मिक स्वतंत्रता।
- बच्चे और बुजुर्ग: विशेष देखभाल और सुरक्षा।

www.onepointlearning.com

(घ) सुभाषचंद्र बोस देश के समस्त युवा वर्ग को संबोधित करते हुए कहते हैं- "हे मेरे तरुण भाइयो!" उनका संबोधन केवल 'भाइयो' शब्द तक ही क्यों सीमित रहा होगा?

उत्तर: उस समय 'भाइयो' शब्द का प्रयोग सामान्यतः पूरे समूह को संबोधित करने के लिए होता था, जिसमें महिलाएँ भी शामिल थीं। यह उस समय की भाषा और सामाजिक परंपरा का हिस्सा था। नेताजी का उद्देश्य सभी युवाओं को प्रेरित करना था, न कि केवल पुरुषों को।

(ङ) "यह स्वप्न मैं तुम्हें उपहारस्वरूप देता हूँ- स्वीकार करो।" सुभाषचंद्र बोस के इस आह्वान पर श्रोताओं (युवा वर्ग) की क्या प्रतिक्रिया रही होगी?

उत्तर: श्रोताओं, विशेषकर युवाओं, ने इस आह्वान को उत्साह और प्रेरणा के साथ स्वीकार किया होगा। नेताजी के जोशीले शब्दों ने उन्हें देश के लिए कुछ करने की प्रेरणा दी होगी। वे इस स्वप्न को साकार करने के लिए प्रेरित और संकल्पित हुए होंगे।

शीर्षक

(क) आपने नेताजी सुभाषचंद्र बोस के भाषण का एक अंश पढ़ा है, इसे 'तरुण के स्वप्न' शीर्षक दिया गया है। अपने समूह में चर्चा करके लिखिए कि यह शीर्षक क्यों दिया गया होगा?

उत्तर: इस भाषण का मुख्य उद्देश्य देश के युवाओं को प्रेरित करना और उन्हें एक नवीन, स्वतंत्र और प्रगतिशील भारत का सपना दिखाना है। सुभाषचंद्र बोस ने विशेष रूप से युवा वर्ग (तरुणों) को संबोधित किया और उनसे अपने सपनों को पूरा करने का आह्वान किया। इसलिए इस अंश को 'तरुण के स्वप्न' शीर्षक दिया गया है।

(ख) यदि आपको भाषण के इस अंश को कोई अन्य नाम देना हो तो क्या नाम देंगे? आपने यह नाम क्यों सोचा? यह भी लिखिए।

उत्तर: मैं इस भाषण को "स्वतंत्र भारत का आह्वान" नाम दूँगा।

कारण: यह भाषण युवाओं को स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने और जिम्मेदारी उठाने के लिए प्रेरित करता है। इसमें एक नए भारत के निर्माण की स्पष्ट कल्पना प्रस्तुत है, इसलिए यह नाम सार्थक होगा।

(ग) सुभाषचंद्र बोस ने अपने समय की स्थितियों या समस्याओं को अपने संबोधन में स्थान दिया है। यदि आपको अपनी कक्षा को संबोधित करने का अवसर मिले तो आप किन-किन विषयों को अपने उद्बोधन में सम्मिलित करेंगे और उसका क्या शीर्षक रखेंगे?

उत्तर:

- **विषय**: शिक्षा का महत्व, पर्यावरण संरक्षण, नशामुक्त समाज, तकनीकी प्रगति, सामाजिक एकता।
- **शीर्षक**: "सशक्त युवा, सशक्त भारत"
- **कारण**: आज के युवा ही देश का भविष्य हैं। उन्हें सकारात्मक दिशा देने के लिए यह शीर्षक प्रेरणादायक होगा।

भाषा की बात

(क) सुभाषचंद्र बोस ने अपने भाषण में संज्ञा, संगठन या भाव आदि का बोध कराने वाले शब्दों के साथ उनकी विशेषता अथवा गुण बताने वाले शब्दों का प्रयोग किया है। उनके भाषण से विशेषता अथवा गुण बताने वाले शब्द ढूँढ़कर दिए गए समूह को पूरा कीजिए—

www.onepointlearning.com

उत्तर:

विशेषण	संज्ञा	विशेषण	संज्ञा
अखंड	सत्य	अजय	शक्ति
उज्ज्वल	जीवन	स्वाधीन	राष्ट्र
सत्यनिष्ठ	समाज	असीम	आनंद

(ख) सुभाषचंद्र बोस ने तो उपर्युक्त विशेषणों के साथ इन शब्दों को रखा है। आप किन विशेषणों के साथ इन उपर्युक्त शब्दों को रखना चाहेंगे और क्यों? लिखिए।

उत्तर:

संज्ञा	मेरा चुना विशेषण	कारण
1. सत्य	शाश्वत सत्य	- सत्य हमेशा अटल और अनंत होता है।
2. जीवन	सार्थक जीवन	- जीवन का लक्ष्य मूल्यवान कर्म होना चाहिए।
3. समाज	समानतापूर्ण समाज	- समाज में सबको समान अधिकार और सम्मान मिलना चाहिए।
4. शक्ति	अदम्य शक्ति	- दृढ़ इच्छाशक्ति और साहस राष्ट्र को मजबूत बनाते हैं।
5. राष्ट्र	गौरवशाली राष्ट्र	- हमारे देश का इतिहास और संस्कृति महान है।
6. आनंद	निर्मल आनंद	- सच्चा आनंद शांति और सेवा से मिलता है।

विपरीतार्थक शब्द और उनके प्रयोग

(क) "और उस पर एक स्वाधीन राष्ट्र" इस वाक्यांश में रेखांकित शब्द 'स्वाधीन' का विपरीत अर्थ देने वाला शब्द है 'पराधीन'। इसी प्रकार के कुछ विपरीतार्थक शब्द आगे दिए गए हैं, लेकिन वे आमने-सामने नहीं हैं। रेखाएँ खींचकर विपरीतार्थक शब्दों के सही जोड़े बनाइए—

क्रम	स्तंभ 1	विपरीतार्थक शब्द (स्तंभ 2)
1.	**स्वीकार**	**कर्मण्य/कर्मठ**
2.	**सार्थक**	**विपन्न**
3.	**विषमता**	**अस्वीकार**
4.	**क्षुद्र**	**जीवन**
5.	**संपन्न**	**निरर्थक**

क्रम	स्तंभ 1	विपरीतार्थक शब्द (स्तंभ 2)
6.	**अकर्मण्य**	**समानता**
7.	**मरण**	**विशाल/बृहत्/विराट/महान**

उत्तर:

क्रम	स्तंभ 1	विपरीतार्थक शब्द (स्तंभ 2)
1.	**स्वीकार**	- अस्वीकार
2.	**सार्थक**	- निरर्थक
3.	**विषमता**	- समानता
4.	**क्षुद्र**	- विशाल/बृहत्/विराट/महान
5.	**संपन्न**	- विपन्न
6.	**अकर्मण्य**	- कर्मण्य/कर्मठ
7.	**मरण**	- जीवन

(ख) अब स्तंभ 1 और स्तंभ 2 के सभी शब्दों से दिए गए उदाहरण के अनुसार वाक्य बनाकर लिखिए, जैसे— "समाज की उन्नति अकर्मण्य नहीं अपितु कर्मण्य व्यक्तियों पर निर्भर है।"

उत्तर:

1. **स्वीकार – अस्वीकार**
- हमें अपने अच्छे गुणों को स्वीकार करना चाहिए और बुराइयों को अस्वीकार करना चाहिए।

2. **सार्थक – निरर्थक**
- परिश्रम से किया गया कार्य सार्थक होता है, जबकि आलस्य में बिताया समय निरर्थक है।

3. **विषमता – समानता**
- समाज से आर्थिक विषमता मिटाकर समानता स्थापित करनी चाहिए।

4. **क्षुद्र – विशाल**
- हमें अपने क्षुद्र स्वार्थ छोड़कर विशाल दृष्टिकोण अपनाना चाहिए।

5. **संपन्न – विपन्न**
- हमें विपन्न लोगों की मदद कर उन्हें संपन्न बनाने का प्रयास करना चाहिए।

6. **अकर्मण्य – कर्मण्य**
- प्रगति कर्मण्य लोगों से होती है, अकर्मण्य व्यक्ति समाज पर बोझ बनते हैं।

7. **मरण – जीवन**
- सच्चे कर्म से मरण के बाद भी व्यक्ति का जीवन लोगों के दिलों में जीवित रहता है।

www.onepointlearning.com

पाठ से आगे

आपकी बात

(क) आपने सुभाषचंद्र बोस के स्वप्न के बारे में जाना। आप अपने विद्यालय, राज्य और देश के बारे में कैसे स्वप्न देखते हैं? लिखिए।

उत्तर:

- मैं एक ऐसे विद्यालय का सपना देखता हूँ जहाँ हर छात्र को अच्छी शिक्षा, खेलकूद, कला और विज्ञान के अवसर मिलें।
- मैं एक ऐसे राज्य का सपना देखता हूँ जहाँ सभी लोग शिक्षित, स्वस्थ और सुरक्षित हों, कोई भेदभाव न हो।
- मैं एक देश का सपना देखता हूँ जो स्वच्छ, विकसित, तकनीकी रूप से उन्नत और विश्व में अग्रणी हो।
- मेरा सपना है कि हमारा भारत पूरी तरह से भ्रष्टाचार, गरीबी, और अशिक्षा से मुक्त हो और सबको समान अवसर मिले।

(ख) हमें बड़े संघर्षों के बाद स्वतंत्रता मिली है। अपनी इस स्वतंत्रता को बनाए रखने के लिए हम अपने स्तर पर क्या-क्या कर सकते हैं? लिखिए।

उत्तर:

- संविधान और कानून का सम्मान करना।
- मतदान का अधिकार समझदारी से उपयोग करना।
- देश की संपत्ति और संसाधनों की रक्षा करना।
- जाति, धर्म और भाषा से ऊपर उठकर भाईचारा बनाए रखना।
- स्वच्छता अभियान, पेड़ लगाना और पर्यावरण की रक्षा करना।
- शिक्षा को बढ़ावा देना और समाज में जागरूकता फैलाना।
- तकनीकी और वैज्ञानिक उन्नति के लिए मेहनत करना।
- हर स्थिति में देशहित को सर्वोपरि मानना।

मिलान कीजिए

(क) नीचे स्तंभ 1 में स्वतंत्रता सेनानियों से संबंधित कुछ तथ्य दिए गए हैं और स्तंभ 2 में स्वतंत्रता सेनानियों के नाम दिए गए हैं। तथ्यों का स्वतंत्रता सेनानियों के नाम से रेखा खींचकर सही मिलान कीजिए। इसके लिए आप अपने शिक्षकों, अभिभावकों और पुस्तकालय तथा इंटरनेट की सहायता ले सकते हैं।

स्तंभ 1 (तथ्य)	स्तंभ 2 (स्वतंत्रता सेनानी)
1. 8 अप्रैल, 1929 को 'सेंट्रल असेंबली' में बम फेंकने वाले क्रांतिकारी, 'शहीद-ए-आज़म' के नाम से जाने जाते हैं।	6. भगत सिंह
2. 'स्वराज पार्टी' के संस्थापकों में से एक, सुभाषचंद्र बोस के राजनीतिक गुरु कहे जाते हैं।	4. चित्तरंजन दास
3. जेल में क्रांतिकारियों के साथ राजबंदियों के समान व्यवहार न होने के कारण क्रांतिकारियों ने 13 जुलाई 1929 से भूख हड़ताल शुरू कर दी। अनशन के तिरसठवें दिन जेल में इनका देहांत हो गया।	5. जतिन दास

www.onepointlearning.com

स्तंभ 1 (तथ्य)	स्तंभ 2 (स्वतंत्रता सेनानी)
4. इनके जन्मदिवस पर 'अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस' मनाया जाता है।	**2. महात्मा गाँधी**
5. नर्मदा नदी के तट पर इनकी एक विशाल प्रतिमा स्थापित है जिसे 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' कहा जाता है।	**1. सरदार वल्लभभाई पटेल**
6. 1921 में असहयोग आंदोलन में गिरफ्तार होने पर न्यायाधीश ने इनसे पिता का नाम पूछा तो इन्होंने कहा—"मेरा नाम आजाद है, पिता का नाम स्वतंत्रता और पता कारावास है।"	**3. चंद्रशेखर आजाद**

उत्तर:

स्तंभ 1 (तथ्य)	स्तंभ 2 (स्वतंत्रता सेनानी)
1. 8 अप्रैल, 1929 को 'सेंट्रल असेंबली' में बम फेंकने वाले क्रांतिकारी, 'शहीद-ए-आज़म' के नाम से जाने जाते हैं।	6. भगत सिंह
2. 'स्वराज पार्टी' के संस्थापकों में से एक, सुभाषचंद्र बोस के राजनीतिक गुरु कहे जाते हैं।	4. चित्तरंजन दास
3. जेल में क्रांतिकारियों के साथ राजबंदियों के समान व्यवहार न होने के कारण क्रांतिकारियों ने 13 जुलाई 1929 से भूख हड़ताल शुरू कर दी। अनशन के तिरसठवें दिन जेल में इनका देहांत हो गया।	5. जतिन दास
4. इनके जन्मदिवस पर 'अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस' मनाया जाता है।	2. महात्मा गाँधी
5. नर्मदा नदी के तट पर इनकी एक विशाल प्रतिमा स्थापित है जिसे 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' कहा जाता है।	1. सरदार वल्लभभाई पटेल
6. 1921 में असहयोग आंदोलन में गिरफ्तार होने पर न्यायाधीश ने इनसे पिता का नाम पूछा तो इन्होंने कहा—"मेरा नाम आजाद है, पिता का नाम स्वतंत्रता और पता कारावास है।"	3. चंद्रशेखर आजाद

(ख) इनमें से एक स्वतंत्रता सेनानी का नाम 'तरुण के स्वप्न' पाठ में भी आया है। उसे पहचान कर लिखिए।
उत्तर: जतिन दास।

सर्वांगीण स्वाधीन संपन्न समाज के लिए प्रयास

नेताजी सुभाषचंद्र बोस और अन्य स्वतंत्रता सेनानियों ने स्वाधीन संपन्न समाज की स्थापना के लिए अपने समय में अनेक प्रयास किए। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात इस दिशा में क्या-क्या उल्लेखनीय प्रयत्न किए गए हैं? अपनी सामाजिक अध्ययन की पाठ्यपुस्तक, अपने अनुभवों एवं पुस्तकालय की सहायता से लिखिए।
उत्तर: नेताजी सुभाषचंद्र बोस और अन्य स्वतंत्रता सेनानियों ने भारत को विदेशी शासन से मुक्त कर एक सशक्त, स्वाधीन और संपन्न समाज बनाने का सपना देखा था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत ने इस दिशा में अनेक उल्लेखनीय प्रयास किए हैं:

1. **संविधान की रचना और लोकतंत्र की स्थापना:**

- 26 जनवरी 1950 को लागू भारतीय संविधान ने सभी नागरिकों को समान अधिकार, स्वतंत्रता, न्याय और अवसर दिए।
- लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था अपनाई गई, जिसमें जनता अपने प्रतिनिधियों का चुनाव करती है।

www.onepointlearning.com

2. **सामाजिक समानता और न्याय:**
- जाति, लिंग, धर्म के आधार पर भेदभाव समाप्त करने के लिए कानून बनाए गए।
- अनुसूचित जाति, जनजाति, पिछड़े वर्ग और महिलाओं को आरक्षण देकर समानता स्थापित करने का प्रयास हुआ।

3. **शिक्षा का प्रसार:**
- सभी के लिए निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का प्रावधान हुआ।
- नई शिक्षा नीति और सर्वशिक्षा अभियान के माध्यम से शिक्षा को व्यापक बनाने का प्रयास किया गया।

4. **आर्थिक विकास और योजनाएँ:**
- पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से कृषि, उद्योग और व्यापार को बढ़ावा दिया गया।
- गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम, मनरेगा जैसी योजनाएँ शुरू की गईं।
- विज्ञान और तकनीक के विकास के लिए निवेश बढ़ाया गया।

5. **स्वास्थ्य और कल्याण योजनाएँ:**
- अस्पतालों, स्वास्थ्य केंद्रों, टीकाकरण कार्यक्रमों और आयुष्मान भारत योजना से स्वास्थ्य सुविधाएँ बढ़ाई गईं।
- पोषण, स्वच्छता और ग्रामीण विकास पर विशेष ध्यान दिया गया।

6. **महिलाओं का सशक्तिकरण:**
- महिलाओं को शिक्षा, रोजगार और राजनीति में समान अधिकार दिए गए।
- 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' जैसी योजनाओं से उनका उत्थान किया गया।

7. **सांस्कृतिक और राष्ट्रीय एकता:**
- स्वतंत्रता सेनानियों के आदर्शों को पाठ्यक्रम में शामिल किया गया।
- विभिन्न भाषाओं, धर्मों और संस्कृतियों के बावजूद भारत को एक सूत्र में पिरोने के लिए कई प्रयास हुए।

स्त्री सशक्तीकरण

(क) सुभाषचंद्र बोस ने स्त्रियों के लिए समान अधिकार की बात की है। अपने अनुभवों के आधार पर बताइए कि उन्हें कौन-कौन से विशेषाधिकार राज्य की ओर से दिए गए हैं?

उत्तर: राज्य की ओर से महिलाओं को कई विशेषाधिकार दिए गए हैं, जैसे:
- शिक्षा का अधिकार और बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए योजनाएँ।
- राजनीतिक अधिकार: चुनाव लड़ने और मतदान करने का समान अधिकार।
- आरक्षण: पंचायत, नगर पालिका और संसद में सीटों का आरक्षण।
- कानूनी सुरक्षा: घरेलू हिंसा, दहेज प्रथा, बाल विवाह आदि के खिलाफ कानून।
- रोजगार में अवसर: सरकारी नौकरियों और उच्च पदों पर समान अवसर।
- स्वास्थ्य योजनाएँ: मातृत्व लाभ, स्वास्थ्य सुरक्षा और पोषण योजनाएँ।
- महिला सुरक्षा: हेल्पलाइन, नारी निकेतन, और सुरक्षा योजनाएँ।

(ख) सुभाषचंद्र बोस ने 'आजाद हिंद फौज' का नेतृत्व किया था। उसमें एक टुकड़ी स्त्रियों की भी थी। उस टुकड़ी का नाम पता लगाकर लिखिए। उस टुकड़ी की भूमिका क्या थी? यह भी बताइए।

www.onepointlearning.com

उत्तर:

- **इस टुकड़ी का नाम था:** झाँसी की रानी रेजिमेंट।
- इसे कप्तान लक्ष्मी सहगल के नेतृत्व में बनाया गया था।
- **भूमिका**:
  - महिला सैनिकों को प्रशिक्षण देकर ब्रिटिश शासन के खिलाफ युद्ध में भाग लेने के लिए तैयार किया गया।
  - उन्होंने आज़ादी के लिए पुरुषों के साथ मिलकर लड़ने का साहस दिखाया और महिलाओं को प्रेरित किया।

आपके प्रिय स्वतंत्रता सेनानी

आपके प्रिय स्वतंत्रता सेनानी

आप किस स्वतंत्रता सेनानी के कार्यों व विचारों से प्रभावित हैं? कारण सहित लिखिए, और अभिनय (रोल प्ले) करते हुए उनके विचारों को कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर: मेरा प्रिय स्वतंत्रता सेनानी भगत सिंह हैं।

कारण: उन्होंने कम उम्र में ही देश के लिए बलिदान दिया।

उनका साहस, निर्भीकता और "इंकलाब जिंदाबाद" का नारा आज भी युवाओं को प्रेरित करता है।

वे समानता और न्यायपूर्ण समाज के लिए जीवन समर्पित कर गए।

(कक्षा में रोल प्ले के लिए आप भगत सिंह की पोशाक पहनकर उनका विचार प्रस्तुत कर सकते हैं।)

"तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा"

ब्रिटिश शासन के विरुद्ध संघर्ष में 1944 में सुभाषचंद्र बोस ने 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा' नारे के माध्यम से आह्वान किया था। स्वाधीनता संग्राम के दौरान और भी बहुत से नारे दिए गए। ये नारे स्वतंत्रता सेनानियों के अदम्य साहस, निर्भीकता और देश-प्रेम को दर्शाते हैं।

नीचे स्तंभ 1 में कुछ नारे दिए गए हैं। नारों के सामने लिखिए कि यह किसके द्वारा दिया गया? आप पुस्तकालय या इंटरनेट की सहायता भी ले सकते हैं।

उत्तर:

नारा	स्वतंत्रता सेनानी
• **स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है।**	बाल गंगाधर तिलक
• **करो या मरो**	महात्मा गांधी
• **मैं आजाद हूँ, आजाद रहूँगा और आजाद ही मरूँगा।**	चंद्रशेखर आजाद
• **इंकलाब जिंदाबाद, साम्राज्यवाद मुर्दाबाद**	भगत सिंह और साथियों (सुखदेव, राजगुरु)
• **पूर्ण स्वराज**	जवाहरलाल नेहरू (1929, लाहौर अधिवेशन)

परियोजना कार्य

आप सभी राज्यों के स्वतंत्रता सेनानियों के विषय में पढ़कर उनमें से 10 महिला एवं 10 पुरुष स्वतंत्रता सेनानियों के चित्रों का संग्रह करके एक संग्रहिका तैयार कीजिए। चित्रों के नीचे उनके विशेष योगदान के बारे में एक-दो वाक्य भी लिखिए। अपनी संग्रहिका तैयार करते समय ध्यान रखिए कि आप किसी भी राज्य से एक से अधिक व्यक्ति न चुनें।

उत्तर:

महिला स्वतंत्रता सेनानी

www.onepointlearning.com

क्रम	नाम	राज्य	योगदान
1.	**रानी लक्ष्मीबाई**	मध्यप्रदेश (झाँसी)	1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में अंग्रेजों से वीरतापूर्वक लड़ीं।
2.	**कस्तूरबा गांधी**	गुजरात	महात्मा गांधी के साथ स्वतंत्रता आंदोलनों में सक्रिय रहीं।
3.	**बेगम हज़रत महल**	उत्तरप्रदेश	1857 की क्रांति में अंग्रेजों के खिलाफ सेना का नेतृत्व किया।
4.	**एनी बेसेंट**	तमिलनाडु (चेन्नई)	होम रूल आंदोलन का नेतृत्व किया।
5.	**अरुणा आसफ़ अली**	दिल्ली	1942 के भारत छोड़ो आंदोलन की अग्रणी नेता थीं।
6.	**(सुझाता कृष्णन नायडू)**	केरल	स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय, महिलाओं के लिए प्रेरणा स्रोत।
7.	**कमला देवी चट्टोपाध्याय**	कर्नाटक	नमक सत्याग्रह और समाज सुधार कार्यों में अग्रणी भूमिका।
8.	**मातंगिनी हाजरा**	पश्चिम बंगाल	1942 आंदोलन में गोली लगने के बावजूद तिरंगा लेकर आगे बढ़ीं।
9.	**उषा मेहता**	महाराष्ट्र	भूमिगत रेडियो स्टेशन चलाकर आज़ादी के संदेश फैलाए।
10.	**झलकारी बाई**	उत्तरप्रदेश (झाँसी)	झाँसी की रानी की सेना में वीरता दिखाई और अंग्रेजों को भ्रमित किया।

पुरुष स्वतंत्रता सेनानी

क्रम	नाम	राज्य	योगदान
1.	**महात्मा गांधी**	गुजरात	सत्याग्रह और अहिंसा के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व किया।
2.	**सुभाषचंद्र बोस**	ओडिशा	आजाद हिंद फौज का गठन कर सशस्त्र संघर्ष का नेतृत्व किया।
3.	**बाल गंगाधर तिलक**	महाराष्ट्र	"स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है" का नारा दिया।
4.	**जवाहरलाल नेहरू**	उत्तरप्रदेश	स्वतंत्र भारत के पहले प्रधानमंत्री और पूर्ण स्वराज के प्रवर्तक।
5.	**भगत सिंह**	पंजाब	शहीद-ए-आजम; असेंबली बमकांड के लिए प्रसिद्ध।
6.	**चंद्रशेखर आजाद**	मध्यप्रदेश	क्रांतिकारी दल 'हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन' के नेता।
7.	**राजा महेन्द्र प्रताप सिंह**	हरियाणा	भारत की पहली अंतरिम सरकार (1915) के अध्यक्ष।
8.	**सरदार वल्लभभाई पटेल**	गुजरात	भारत के लौह पुरुष; रियासतों का एकीकरण किया।
9.	**लाल लाजपत राय**	पंजाब	लाठीचार्ज में घायल होकर शहीद; "पंजाब केसरी" कहलाए।
10.	**विनायक दामोदर सावरकर**	महाराष्ट्र	क्रांतिकारी विचारक; अंडमान जेल में लंबी सजा भुगती।

www.onepointlearning.com